राष्ट्रवाद क्या है ?

राष्ट्रवाद अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम है। राष्ट्रवाद अपने राष्ट्र के भौगोलिक, सांस्कृतिक और समाज में रहने वाले लोगों में प्रेम और एकता की भावना है।

मेजिनी कौन था ?

मेजिनी को इटली के राष्ट्रीय आन्दोलन का मसीहा कहा जाता है। मेजिनी का जन्म 1805 में जिनेवा में हुआ। पढ़ाई पूरी करने के बाद वो एक क्रांतिकारी संगठन 'कार्बोनरी' का सदस्य बन गया। बाद में उसने 'यंग इटली' नाम के संगठन की स्थापना की।

जर्मनी के एकीकरण की बाधाएँ क्या थी ?

जर्मनी के एकीकरण की अनेकों बाधाएँ थीं। जर्मनी लगभग 300 छोटे - बड़े राज्यों में बँटा हुआ था। इन सभी राज्यों के प्रमुखों की अपनी - अपनी अलग सोच थी। धार्मिक और जातीय रूप से भी वे एक नहीं थे।

मेटरनिख युग क्या है ?

मेटरनिख अपने समय का सबसे महत्वपूर्ण और सबसे प्रतिभाशाली राजनायिक था। उसने यूरोपीय राजनीति में इतनी प्रमुख भूमिका निभाई कि 1815 से 1848 तक के यूरोपीय इतिहास का काल 'मेटरनिख युग' के नाम से जाना जाता है।

1848 के फ्रांसीसी क्रांति के क्या कारण थे?

फ्रांस का शासक लुई फिलिप उदारवादी था, लेकिन वह महत्वाकांक्षी था। उसने 1840 में गीजो को प्रधानमंत्री नियुक्त किया। गीजो कट्टर प्रतिक्रियावादी था। वह राज्य में किसी भी सुधार को लागू करने के पक्ष में नहीं था। राजा लुई फिलिप भी अमीरों का साथ पसन्द करता था। उसके पास कोई सुधारात्मक कार्यक्रम नहीं था। देश में भूखमरी और बेरोजगारी चरम पर थी। फलतः सुधारवादी नाराज रहने लगे। इन सभी कारणों ने 1848 के फ्रांसीसी क्रांति को जन्म दिया।

इटली और जर्मनी के एकीकरण में आस्ट्रिया की क्या भूमिका थी ?

• **इटली का एकीकरण** - आस्ट्रिया और पिडमाउण्ट में सीमा के विवाद को लेकर आस्ट्रिया और इटली में युद्ध शुरू हो गया। युद्ध में आस्ट्रिया की हार हुई और उसके एक बड़े राज्य लोम्बार्डी पर पिडमाउण्ट का अधिकार हो गया तथा इटली का एकीकरण पूर्ण हुआ।

• **जर्मनी का एकीकरण** - जर्मनी के एकीकरण में सबसे बड़ा बाधक आस्ट्रिया था। बिस्मार्क ने प्रशा की सेना का संगठन कर उसे यूरोप का शक्तिशाली राष्ट्र बना दिया। उसने कूटनीतिक माध्यम से आस्ट्रिया को कमजोर बनाने का प्रयास किया। इस प्रकार से आस्ट्रिया के पृथक्करण के कारण की जर्मनी का एकीकरण संभव हुआ।

यूरोप में राष्ट्रवाद को फैलाने में नेपोलियन बोनापार्ट किस तरह सहायक हुआ ?

नेपोलियन बोनापार्ट ने न सिर्फ जर्मनी और इटली में राष्ट्रियता की स्थापना में मदद की, बल्कि सम्पूर्ण यूरोप के देशों में राष्ट्रियता को लेकर उथल - पुथल आरम्भ हो गया। इस राष्ट्रियता के मूल में राष्ट्रियता की भावना के साथ ही लोकतांत्रिक विचारों का भी उदय हुआ। हंगरी, बोहेनिया तथा यूनान में स्वतंत्रता आन्दोलन इसी राष्ट्रवाद का परिणाम था। इसी आन्दोलन के प्रभाव के कारण उस्मानिया साम्राज्य का पतन हो गया और वह तुर्कों तक में ही सिमट कर रह गया। राष्ट्रवाद के कारण ही बालकन क्षेत्र के स्लाव जाति को संगठित होने का मौका मिला और सर्बिया नामक नये देश का जन्म हुआ।

'गैरबाल्डी' के कार्यों की चर्चा करें।

गैरबाल्डी सशस्त्र क्रांति का समर्थक था। वह इटली के रियासतों का एकीकरण करके इटली में गणतंत्र की स्थापना करना चाहता था। वह मेंजिनी के विचारों से बहुत प्रभावित था, किन्तु बाद में काउंट काबूर के प्रभाव में आकर संवैधानिक राजतंत्र का समर्थक बन गया। उसने अपने लोगों को मिलाकर एक सेना का गठन किया और सेना के बल पर इटली के प्रांतों सिसली तथा नेपल्स पर अधिकार जमा लिया। उसने विक्टर एमैनुअल के प्रतिनिधि के रूप में वहाँ की सत्ता सम्भाल ली। वह रोम पर आक्रमण करना चाहता था लेकिन काबूर के कहने से उसने यह योजना त्याग दी। उसने बहुत कुछ किया किन्तु कहीं का शासक बनने से इंकार कर दिया। इस त्याग से विश्व भर में उसकी प्रशंसा हुई।

"विलियम I के बेगैर जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क के लिए असम्भव था। " कैसे?

विलियम I जानता था कि जर्मनी के एकीकरण के मार्ग में आस्ट्रिया सबसे बड़ा बाधक है तथा इसे हटाये बिना जर्मनी का एकीकरण संभव नहीं है। अतः आस्ट्रिया से मुक्ति पाने के लिए उसे युद्ध में हराना जरूरी था। इसके लिए आवश्यक था कि जर्मनी सैनिक दृष्टि से मजबूत बने। विलियम ने प्रशा की सैनिक शक्ति बढ़ाने के लिए एक ठोस योजना बनायी। उदारवादियों के विरोध के बाद भी विलियम ने सैन्य बजट पर अधिक खर्च किया। विलियम की इस नीति के कारण बिस्मार्क ने 'रक्त एवं लौह' की नीति का अवलम्बन किया तथा जर्मनी का एकीकरण संभव हुआ।

इटली के एकीकरण में मेजनी, काबूर और गैरीबाल्डी के योगदानों को बतावें।

• **मेजनी का योगदान** - मेजनी एक सफल साहित्यकार के साथ साथ एक योग्य सेनापति भी था। लेकिन उसे राजनीति की अच्छी - समझ नहीं थी। अनेकों असफलता के बावजूद उसने हार नहीं मानी। 1848 में यूरोपी क्रान्ति के दौर में मेजनी को आस्ट्रिया छोड़ना पड़ा। बाद में वह इटली की राजनीति में सक्रिय हो गया।

• **काउंट काबूर का योगदान** - सार्डिनिया-पिडमाउंट का शासक 'विक्टर एमैनुएल' राष्ट्रवादी था और इटली का एकीकरण चाहता था। इस काम को करने के लिए उसने 'काउंट काबूर' को अपना प्रधानमंत्री चुना। काबूर सफल राजनीतिज्ञ और कट्टर राष्ट्रवादी था। उसका मानना था कि इटली के एकीकरण में आस्ट्रिया सबसे बड़ा बाधक है। उसने आस्ट्रिया को हराने के लिए फ्रांस से मित्रता कर ली और उसकी ओर से 1853 - 54 के क्रिमिया युद्ध में भाग लेने की घोषण कर दी। युद्ध की समाप्ति के बाद पेरिस के शांति - सम्मेलन में फ्रांस और आस्ट्रिया के साथ पिडमाउंट को भी बुलाया गया।

• **गैरबाल्डी का योगदान** - 'गैरबाल्डी' महान क्रान्तिकारी था। वह सशस्त्र क्रान्ति द्वारा दक्षिणी इटली के राज्यों के एकीकरण के प्रयास में था। पहले तो वह मेजनी का - समर्थक था किन्तु बाद में काउंट काबूर के प्रभाव में आकर संवैधानिक राजतंत्र का समर्थक बन गया। उसने अपने लोगों से एक सेना बना इटली के प्रांतों सिसली तथा नेपल्स पर अधिकार जमा लिया।

अंततः मेजनी, काबूर और गैरबाल्डी के मिले-जुले प्रयासों से 1871 तक इटली का एकीकरण सम्भव हो सका।

जर्मनी के एकीकरण में विस्मार्क की भूमिका का वर्णन करें।

बिस्मार्क ने जर्मनी के एकीकरण के लिए नयी नीति अपनाई थी, जिसके चलते उन्हें man of blood and iron भी कहा जाता है। बिस्मार्क जनतंत्र का विरोधी और निरंकुश शासन का समर्थक था। वह राजतंत्र पर किसी प्रकार का संवैधानिक प्रतिबंध नहीं लगाना चाहता था। उसे संसद, संविधान और लोकतंत्र के आदर्शों से घृणा थी। उसका विश्वास था कि जर्मनी के भाग्य का निर्माण राजा ही कर सकता है। उसने क्रांतिकारियों और उदारवादियों की कटु आलोचना की। उसकी कूटनीतिक सफलता थी कि उदारवादी और कहरवादी, दोनों ही बिस्मार्क को अपना समर्थक समझते थे। बिस्मार्क का उद्देश्य प्रशा को शक्तिशाली राष्ट्र बनाकर उसके नेतृत्व में जर्मनी का एकीकरण करना था। उसका दूसरा उद्देश्य ऑस्ट्रिया को जर्मन परिसंघ से बाहर निकालना था, क्योंकि एकीकरण के मार्ग में सबसे बड़ा बाधक ऑस्ट्रिया था। साथ ही वह जर्मनी को यूरोप में प्रमुख शक्ति बनाना चाहता था। उसने प्रशा की सेना का संगठन कर उसे यूरोप का शक्तिशाली राष्ट्र बना दिया। उसने कूटनीतिक माध्यम से ऑस्ट्रिया को कमजोर बनाने का प्रयास किया। बिस्मार्क ऑस्ट्रिया के विरुद्ध रूस से मित्रता चाहता था। 10 मई, 1831 को फ्रैंकफर्ट में संधि हुई, इससे सम्पूर्ण जर्मनी क्षेत्र एक साथ मिल गए और जर्मनी का एकीकरण पूरा हो गया।

राष्ट्रवाद के उदय और प्रभाव की चर्चा कीजिए।

सर्वप्रथम राष्ट्रवाद का उदय फ्रांस की क्रांति के फलस्वरूप हुआ। इस क्रांति ने पूरे यूरोप में राष्ट्रवाद की लहर उठा दी। जिसके कारण अनेक छोटे - बड़े राष्ट्रों का उदय हुआ। बाल्कन जैसे क्षेत्र के छोटे राज्य एवं जातियों के समूहों में भी राष्ट्रवाद की भावना जन्म लेने लगी। जर्मनी, इटली, फ्रांस, इंग्लैंड जैसे देशों में तो राष्ट्रवाद इतनी कट्टरता से उभरा कि ये एक - दूसरे से द्वेष करने लगे। यह राष्ट्रवाद का एक नकारात्मक पक्ष था। औद्योगिक क्रांति की सफलता ने भी कट्टर राष्ट्रवादिता को हवा देने का काम किया। ये बड़े साम्राज्यवादी सर्वप्रथम एशिया और बाद में अफ्रीका को अपना निशाना बनाने लगे। इसके लिए इनमें अनेक युद्ध भी हुए। जो जितना शक्तिशाली था, वह उतना ही बड़े भाग पर कब्जा जमा बैठा। इन उपनिवेशवादियों ने जहाँ अपनी जड़ जमाई वहाँ उन्होंने खुलकर शोषण किया। उपनिवेशों से उन्हें दो चीज़े आसानी से मिलीं। एक तो उद्योगों के लिए कच्चा माल मिलने लगा और दूसरा यह कि तैयार माल का बाजार भी हाथ में आ गया। भारत के लिए इंग्लैंड, फ्रांस, पुर्तगाल और हॉलैंड में युद्ध हुआ, जिसमें इंग्लैंड विजयी रहा।

जुलाई, 1830 की क्रांति का विवरण दीजिए।

1828 में लुई 18 की मृत्यु के पश्चात् उसका भाई चार्ल्स दशम् गद्दी पर बैठा। चार्ल्स दशम् क्रांति का घोर शत्रु था और राजा के दैवीय अधिकार के सिद्धांत में विश्वास करता था। वह पुरातन व्यवस्था को फिर से प्रतिष्ठित करना चाहता था। वह चर्च की महानता का प्रबल समर्थक था। जनता इस नये राजा से जितनी घृणा करती थी, कुलीन लोग उतना ही उसका आदर करते थे। वास्तव में चार्ल्स दशम् का घोर प्रतिक्रियावादी चरित्र और सामन्तों, कुलीनों तथा पादारियों के प्रति उसके भारी पक्षपात ने फ्रांस को जुलाई, 1830 के क्रांति के द्वार पर ला खड़ा किया।

विद्यार्थी, अवकाश प्राप्त सैनिक, मजदूर सब क्रांति के मार्ग पर बढ़ गये। इस क्रांति का नेतृत्व वयोवृद्ध नेता लफायत ने किया। विरोध के फलस्वरूप चार्ल्स दशम् को सिंहासन छोड़ना पड़ा। इस प्रकार क्रांति सफल हुई और चार्ल्स का शासन समाप्त हुआ। जुलाई क्रांति मध्य वर्ग की विजय थी जिसने संवैधानिक घोषणा पत्र के दोषों को दूर किया और कुलीन तथा धर्म गुरुओं का शासन समाप्त किया। इसी वर्ग ने 1789 की महान क्रांति का संचालन किया था और इसी वर्ग ने 1794 में मजदूरों के बढ़ते हुए प्रभाव से क्रांति की रक्षा की थी। 1815 से 1830 के बीच विशेषाधिकार वर्ग की चेष्टा से इस वर्ग के हित पर खतरा उत्पन्न हो गया था। अतः मध्यम वर्ग पुनः अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सक्रिय हुआ। उसने प्रतिक्रियावादी शासकों को भागने पर विवश किया और श्रमजीवी वर्ग को चुप करके शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली।

यूनानी स्वतंत्रता आन्दोलन का संक्षिप्त विवरण दें।

जुलाई 1830 की फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित होकर यूनानियों में राष्ट्रीयता की भावना जग गई। यूनान यूरोपीय सभ्यता की जननी माना जाता है, सभी यूनानियों का धर्म और उनकी जाति - संस्कृति एक थी, साथ ही 'प्राचीन यूनान सभ्यता', संस्कृति, साहित्य, विचार, दर्शन, कला, चिकित्सा विज्ञान आदि के क्षेत्र में न केवल यूरोप का वरन पूरे विश्व का जनक था। इसके बावजूद भी वह उस्मानिया साम्राज्य के एक अंग के रूप में जाना जाता था। फलतः तुर्की के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ हो गया। आन्दोलन में मध्य वर्ग का सहयोग मिलने लगा जो काफी शक्तिशाली था। यूनान की स्थिति तब और विकट हो गई, जब तुर्की ने यूनानी आन्दोलनकारियों को एक - एक कर दबाना शुरू कर दिया। 1821 ई. में यूनानियों ने विद्रोह शुरू कर दिया। रूस तो यूनानियों के पक्ष में था, लेकिन आस्ट्रिया के दबाव के कारण वह खुलकर सामने नहीं आ रहा था। लेकिन जार निकोलस के समर्थन मिलने पर एक प्रकार से सम्पूर्ण यूरोप से यूनान को समर्थन मिलने लगा। यूनान और तुर्की में युद्ध छिड़ गया। अनेक देश यूनानियों के पक्ष में आए, युद्ध में यूनान की विजय हुई।